वर्ष 12, अंक 1, अप्रैल, 2021 ISSN-2249-1597

शोध समीक्षा

पीयर रिव्यूड एण्ड रेफ्रीड शोध पत्रिका

SHODH SAMEEKSHA

(Bi-Lingual Peer & Reviewed Research Journal)

सम्पादक

डॉ० बलजीत कुमार श्रीवास्तव

प्रकाशक

रिसर्च एण्ड एजूकेशन सोसाइटी, लखनऊ

'प्रश्रय'-610/191 'A' केशवनगर, सीतापुर रोड, लखनऊ -226020

संरक्षक

प्रोफेसर पवन अग्रवाल

हिन्दी तथा आधुनिक भारतीय भाषा विभाग

लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।

परामर्शदाता मण्डल

प्रो० सूर्य प्रसाद दीक्षित (लखनऊ), प्रो० सुरेन्द्र दुबे (गोरखपुर), प्रो० नंद किशोर पाण्डेय (जयपुर) प्रो० चितरंजन मिश्र (गोरखपुर), प्रो० हरि शंकर मिश्र (लखनऊ), प्रो. पी.सी. टण्डन (हिन्दी विभाग, दिल्ली), प्रो० रमेश चन्द त्रिपाठी (लखनऊ), प्रो. मो० अलीम (अलीगढ़), डॉ राज नारायण शुक्ल (गाजियाबाद), प्रो० सुधीर प्रताप सिंह (नई दिल्ली) प्रो० अवधेश कुमार (वर्धा) प्रो० श्री प्रकाश मणि त्रिपाठी (अमरकंटक), प्रो. सोमेश कुमार शुक्ल (लखनऊ), प्रो. हरीश शर्मा (सिद्धार्थ नगर), डॉ० एन.एम.पी. वर्मा (लखनऊ), प्रो० अरविन्द मोहन (लखनऊ), प्रो० उमारानी त्रिपाठी (वाराणसी), प्रो० एस.के. दीक्षित (गोरखपुर), प्रो० हर्ष कुमार (गोरखपुर), डॉ० ओ० पी० शुक्ला (लखनऊ), प्रो० ए०के० लाल (लखनऊ), प्रो० कीर्ति पाण्डेय (गोरखपुर), प्रो० शिल्पी वर्मा (लखनऊ), प्रो. मनीष वर्मा (लखनऊ)।

सम्पादकीय सलाहकार मण्डल

प्रो० विमलेश मिश्र (गोरखपुर), प्रो० विनोद शर्मा (जयपुर), प्रो० प्रत्यूष दुबे (सिद्धार्थ नगर), प्रो० जया श्रीवास्तव (लखनऊ), डॉ० राजेश चन्द्र पाण्डेय (उरई), डॉ० प्रणव शास्त्री (पीलीभीत), डॉ० ब्रजेश पाण्डेय (प्रयागराज), डॉ० एस.पी.सिंह (लखनऊ), डॉ० रीता तिवारी (लखनऊ), डॉ० सिद्धार्थ शंकर राय (लखनऊ), डॉ० लता बाजपेई सिंह (लखनऊ), डॉ० दुर्गेश श्रीवास्तव (लखनऊ) डॉ. सुभाष मिश्र (लखनऊ), डॉ० राजेन्द्र प्रसाद द्विवेदी (सीतापुर), डॉ० शिव शंकर यादव (लखनऊ), डॉ० उमेश कुमार शुक्ल (हरिद्वार)।

प्रबन्धकारिणी समिति

प्रोफेसर पवन अग्रवाल (अध्यक्ष), प्रो० रमेश चन्द्र त्रिपाठी (उपाध्यक्ष), रिक्त (उपाध्यक्ष) डॉ० बलजीत कुमार श्रीवास्तव (सचिव), डॉ० धीरेन्द्र सिंह (संयुक्त सचिव), डॉ० अखिलेश कुमार (संयुक्त सचिव), रिक्त (संयुक्त सचिव), डॉ० प्रितीश चन्द्र वैश्य (कोषाध्यक्ष), डॉ० ए.के. लाल (सदस्य), मंजुला यादव (सदस्य), डॉ० अशोक कुमार कैथल (सदस्य)।

सम्पादकीय / पबन्ध एवं प्रकाशन सम्पर्क :

प्रोफेसर पवन अग्रवाल

'प्रश्रय' 610 / 191 'ए' केशवनगर,

सीतापुर रोड, लखनऊ–226020

मो0–09450511639

Email : pawan_lu@rediffmail.com

डॉ० बलजीत कुमार श्रीवास्तव

सम्पादक : **'शोध-समीक्षा'**

असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग,

बाबासाहेब भीमराव अम्बेडर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, लखनऊ

मो0 : 09451087259

Email : drbaljeetsrivastava@gmail.com

सदस्यता राशि चेक, बैंक ड्राफ्ट या मनीआर्डर द्वारा डॉ० बलजीत कुमार श्रीवास्तव, लखनऊ के नाम देय होगी। लखनऊ से बाहर के चेक में 50/- अधिक जोड़ें।

	व्यक्तिगत	*संस्थागत*
एक प्रति का मूल्य	150.00	300.00
पंचवार्षिक	1200.00	2000.00
आजीवन	4000.00	6000.00

'शोध समीक्षा' एक अर्द्धवार्षिक 'पीयर रिव्यूड एंड रेफ्रीड' शोध पत्रिका है।

शोधार्थियों के शोध विचार उनके अपने है। इसके लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है।

अनुक्रम

क्रम	शोध -शीर्षक	शोध-कर्ता	पृ० सं०,
1.	जयवर्धन: यथार्थ की एक स्वप्न कथा	डॉ. जगदीश भगत	1-7
2.	महादेवी के काव्य में गीत तत्त्व	डॉ. नवीन नंदवाना	8-11
3.	दूसरी परंपरा की खोज बनाम् हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास	डॉ. सर्वेश मिश्र	12-16
4.	बलिदान गाथा का अचर्चित कवि	डॉ. सत्येद्र दुबे	17-20
5.	ब्रज की स्वांग विद्या के उन्नायक श्री नथाराम शर्मा	डॉ. शालिनी सिंह	21-23
6.	लोकचेतना के चितेरे कहानीकार फणीश्वर नाथ रेणु	डॉ. अचला पाण्डेय	24-29
7.	कबीर के निर्गुण वैष्णव भक्ति साधना	डॉ. प्रीती सिंह	30-34
8.	महात्मा गाँधी और राष्ट्रभाषा	डॉ. अखिल मिश्रा	35-37
9.	योग दर्शन में कर्म के भेद	डॉ० संगीता गोयल	38-40
10.	देववाणी में पर्यावरण संरक्षण	डॉ. सुनीता सिंह	41-43
11.	हिन्दी साहित्य में आधुनिकता और आधुनिक युग	डॉ. सीमा सिंह	44-46
12.	उपनिषदों में मोक्ष	डॉ. वसुधा श्री	47-49
13.	जैनेन्द्र के कथा साहित्य में बाल मनोविज्ञान	डॉ. आशीष तिवारी	50-53
14.	भारतीय साहित्य में कर्ण का चरित्र विकास	डॉ. अर्चना दीक्षित	54-57
15.	रामशंकर त्रिवेदी की साहित्य सृजन प्रेरणा	सीमा दूबे	58-61
16.	स्त्री विमर्श का प्रथम स्वर-शृँखला की कड़ियाँ	डॉ. अतुल कुमार यादव	62-64
17.	अमिता दुबे की कहानियों में स्त्री चेतना	गौरव कुमार	65-68
18.	दशम ग्रंथ : अवतारवाद का संदर्भ	डॉ, हरीश कुमार सेठी	69-81
19.	Extradition Agreement Between India and UK	Aditya Kumar Singh	82-84
20.	Stress Management Reduce the chances of Cardio Vascular Disease	Dr. Subhashni Sharma	85-87
21.	Current challenges of Higher Education in India	Dr. Nishi Gupta	88-90
22.	Custodial Violence: Abuse of the sprit of the law	Dr. Aryendu Diwedi	91-94

ISSN-2249-1597

वर्ष 12, अंक-1, अप्रैल 2021
पृ.सं-8-11

महादेवी के काव्य में गीति तत्त्व

डॉ. नवीन नंदवाना

सह आचार्य, हिंदी विभाग मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर (राजस्थान)

गीति परम्परा का हिंदी साहित्य में एक लंबा इतिहास है। आदिकालीन कवि विद्यापति, भक्तिकाल के सूर, तुलसी, मीरा आदि भक्त कवि, आधुनिक काल के प्रसाद, निराला, महादेवी और नीरज आदि कवियों ने अपनी लेखनी से इस गीति परंपरा को समवद्धता प्रदान की। महादेवी का तो लगभग सारा ही लेखन इस परम्परा का है। गीतिकाव्य पर विचार करते हुए आचार्य रामचंद्र शुक्ल लिखते हैं कि-''गीतिकाव्य उस नई कविता का नाम है जिसमें प्रकृति के साधारण-असाधारण सब रूपों पर प्रेमदृष्टि डालकर, उसके रहस्य भरे सच्चे संकेतों को परखकर, भाषा को अधिक चित्रमय, सजीव और मार्मिक रूप देकर कविता का जो अकृत्रिम, स्वच्छंद मार्ग निकाला गया है।"[1]

डॉ. श्यामसुंदर दास ने गीतिकाव्य को आत्माभिव्यंजन संबंधी कविता मानते हुए इसके संबंध में लिखा है कि- ''गीतिकाव्य के छोटे-छोटे गेय पदों में मधुर भावापन्न स्वाभाविक आत्मनिवेदन रहता है, इन पदों में शब्द की साधना के साथ-साथ संगीत के स्वरों की भी उत्कृष्ट साधना रहती है, इनकी भावना प्रायः कोमल होती है और एक-एक पद में पूर्ण होकर समाप्त हो जाती है। आधुनिक गीतिकाव्य एवं प्राचीन गीतों में सबसे बड़ा अंतर यह है कि ये आत्माभिव्यंजन की श्रेणी में आते हैं और प्राचीन आल्हखंड, बीसलदेव रासो आदि वस्तु वर्णन विशयक कविता के उदाहरण हैं।"[2]

हिंदी काव्य के वर्तमान युग पर विचार करते हुए महादेवी वर्मा लिखती हैं कि- "हिंदी काव्य का वर्तमान युग गीत प्रधान ही कहा जाएगा। हमारा व्यस्त और व्यक्तिप्रधान जीवन हमें काव्य के किसी अंग की ओर दृष्टिपात करने का अवकाश ही नहीं देना चाहता। आज हमारा हृदय ही हमारे लिए संसार है। हम अपनी प्रत्येक साँस का इतिहास लिख रखना चाहते हैं। अपनी प्रत्येक कम्पन्न को अंकित कर लेने के लिए उत्सुक हैं और प्रत्येक स्वप्न का मूल्य पा लेने के लिए विकल हैं। संभव है यह उस युग की प्रतिक्रिया हो जिसमें कवि का आदर्श अपने विषय में कुछ न कहकर संसार भर का इतिहास कहना था, हृदय की उपेक्षा कर शरीर को आदृत करना था।"[3]

गीतों पर विचार करते हुए महादेवी लिखती हैं कि- "सुख-दुख की भावावेशमयी अवस्था विशेष का गिने-चुने शब्दों में स्वर साधना के लिए उपयुक्त चित्रण कर देना ही गीत है। इसमें कवि को संयोग की परिधि में बंधे हुए जिस भावातिरेक की आवश्यकता होती है, यह सहज प्राप्त नहीं। कारण हम प्रायः भाव की अतिशयता में कला की सीमा लाँघ जाते हैं और इसके उपरांत भाव के संस्कार मात्र में मर्म-स्पर्शिता का शिथिल हो जाना अनिवार्य है।"[4]

यदि हम गीति काव्य के वैशिष्टय की ओर दृष्टि डालें तो पाते हैं कि आत्माभिव्यंजना, भावात्मकता, भावगत एकरूपण, संगीतात्मकता, काल्पनिकता, आकारगत लघुता या संक्षिप्तता और शैली की सुकुमारता जैसे तत्त्वों को हम गीति काव्य की विशेषताओं के रूप में स्वीकार कर सकते हैं। इन्हीं तत्त्वों के आधार पर हम यहाँ महादेवी के गीतों के मूल्यांकन का प्रयास करेंगे। आत्माभिव्यंजना गीतों का प्रमुख गुण है। इसमें कवि अपने अन्तर्मन की अनभुतियों को वाणी प्रदान करता है। वह अपने निजी जीवन के विविध भावों यथा सुख-दुख, करुणा-विषाद, हास-रुदन आदि को अपने गीतों के

माध्यम से सम्प्रेषित करता है। महादेवी के गीतों में भी हमें उनकी व्यक्तिगत अनुभूतियाँ (जिनमें उनका प्रेम-विरह, वेदना-करुणा आदि) द्रष्टव्य होती हैं। अपनी भावनाओं का वाणी देते हुए वह लिखती हैं कि-

"प्राणों के अंतिम पाहुन/ चाँदनी, धुला, अंजन सा, विद्युत मुस्कान बिछाता,
सुरभित समीर पंखों से उड़ जो नभ में घिर आता/ वह वारिद तुम आना बन !"[5]

अपने हृदय में जब उसे विशेष सत्ता की अनुभूति होने लगती है तब वह अपनी भावनाओं को साफ शब्दों में अभिव्यक्ति देती हुई पूछ बैठती हैं कि-

"कौन तुम मेरे हृदय में/ कौन मेरी कसक में नित/मधुरता भरता अलक्षित/ कौन प्यासे लोचनों में
घुमड़ घिर झरता अपरिचित/ स्वर्ण स्वप्नों का चितेरा/नींद के सूने निलय में / कौन तुम मेरे हृदय में?"[6]

अत्यधिक वेदना से करुणार्द्र हुआ महादेवी का मन अपनी विरह पीड़ा को इस प्रकार अभिव्यक्ति देता है-

"विरह का जलजात जीवन, विरह का जलजात।/ वेदना में जन्म करुणा में मिला आवास;
अश्रु चुनता दिवस इसका, अश्रु गिनती रात / जीवन विरह का जलजात!
आँसुओं का कोश उर, दृग अश्रु की टकसाल;
तरल जल कण से बने घन सा क्षणिक मृदुगात।/ जीवन विरह का जलजात!"[7]

महादेवी के गीतों में हमें भावगत एकरूपता द्रष्टव्य होती है। गीतों के अलावा अन्य रचनाओं में हमें एकाधिक भावों का समन्वय दिखाई पड़ता है जबकि गीत किसी एक भाव को लेकर लिखा जाता है और अपनी पूर्णता तक वह एक ही भाव विद्यमान रहता है। प्रस्तुत गीत में महादेवी आत्मा-परमात्मा के संबंधों को जोड़ती हुई आत्मा को परमात्मा की कृपा में बढ़ने वाली सहचरी के रूप में चित्रित करती है। यहाँ परमसत्ता की शक्ति को स्वीकार करते हुए आत्मा को उसके समक्ष अनुगामिनी मानती है और यही भाव हमें इस गीत में आद्योपांत दृष्टव्य होता है-

"प्रिय सुधि भूले री मैं पथ भूली/ मेरे ही मृदु उर में हँस बस;
श्वासों में भर मादक मधु रस/ लघु कलिका के चल परिमल से/ वे नभ छाए री मैं वन फूली!"[8]

संगीतात्मकता गीति काव्य का एक मूल गुण है। स्वयं महादेवी कहती हैं कि- "काव्य का वही अंश गेय कहा जाएगा जो अनुभूति की तीव्रता के लिए उपयुक्त शब्द संयोजन कर सके।"[9] डॉ. रामदहिन मिश्र लिखते हैं कि- ''गीतिकाव्य के लिए सबसे बड़ी बात है उसका संगीतात्मक होना। यह संगीत बाह्य न होकर आंतरिक होता है। इसको अपने रूप की अपेक्षा नहीं रहती।"[10] महादेवी के काव्य में संगीतात्मकता मिलती है। कोमलता, मधुरता के साथ-साथ स्वर, लय और टेक काव्य की शोभा में वृद्धि करते हैं-

"जाग बेसुध जाग / अश्रुकण से उर सजाया त्याग हीरक द्वार,
भीख दुख भी माँगने फिर जो गया प्रतिद्वार / शूल जिसने फूल छू चंदन किया संताप;
सुन जगाती है उसी सिद्धार्थ की पद चाप/ करुणा के दुलारे जाग।"[11]

गीतों में सरसता, सजीवता और सुकुमारता जैसे भावों का संचार करने के लिए कवि को काल्पनिकता का सहारा लेना पड़ता है। इसकी काल्पनिकता के माध्यम से ही गीतों में रमणीयता आती है। महादेवी के काव्य में भी हमें काल्पनिकता द्रष्टव्य होती है। महादेवी अपनी अद्वैत भावना को जिस प्रकार काल्पनिकता के सहारे से सुंदर रूप में प्रस्तुत करती हैं। उसका एक उदाहरण द्रष्टव्य है-

"बीन भी हूँ, मैं तुम्हारी रागिनी भी हूँ/ नींद थी मेरी अचल निस्पंद कण-कण में,
प्रथम जागृति थी जगत के प्रथम स्पंदन में/ प्रलय में मेरा पता पदचिह्न जीवन में,
शाप हूँ जो बन गया वरदान बंधन में/ कूल भी हूँ कूलहीन प्रवाहिनी भी हूँ।

XXX

आग हूँ जिससे ढुलकते बिंदु हिमजल के/ शून्य हूँ जिसको बिछे हैं पाँवड़े, पल के,
पुलक हूँ वह जो पला है कठिन प्रस्तर में/ हूँ वही प्रतिबिंब जो आधार के उर में ;
नील घन भी हूँ सुनहली दामिनी भी हूँ।"[12]

साहित्य की अन्य विधाओं में किसी विषय पर पर्याप्त विस्तार के साथ लिखा जाता है। महाकाव्य व खंडकाव्यों में तो पर्याप्त विस्तार होता ही है। यही भाव संप्रेषण गीतों के माध्यम से कुछ पंक्तियों के सहारे ही संभव हो जाता है। महादेवी के लगभग सभी गीत इस विशेषता से युक्त हैं। कुछ गीत यदि अतिसंक्षिप्त नहीं भी हैं तो भी उसका अत्यधिक विस्तार नहीं हैं-

"जो तुम आ जाते एक बार/ कितनी करुणा कितने संदेश/पथ में बिछ जाते बन पराग/गाता प्राणों का तार तार
अनुराग भरा उन्माद राग/ आँसू लेते वे पद पखार/हँसं उठते पल में आर्द्र नैन/ घुल जाता ओठों से विषाद
छा जाता जीवन में वसंत/लुट जाता चिरसंचित विराग/ आँखें देती सर्वस्व वार।"[13]

यहाँ छोटी-छोटी पंक्तियों में यह गीत पूर्ण हो जाता है और अपना संदेश व भाव संप्रेषित कर देता है। इसी तरह 'क्या पूजन क्या अर्चन रे।' गीत को हम आकारगत लघुता के रूप में देख सकते हैं। 'घन बनूं वर दो मुझे प्रिय।' गीत केवल सात पंक्तियों में भावाभिव्यक्ति कर देता है। भावात्मकता गीतों की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता होती है। सुख-दुख, प्रेम-विरह के भाव गीतों में सौंदर्य भरते हैं। मिलन व विरह की स्मृतियाँ, हृदय की व्याकुलता, राग आदि भाव गीतों में मधुरता व रस का संचार करते हैं। प्रेम व विरह के साथ करुणा, माधुर्य, सहानुभूति, प्राकृतिक सौंदर्य आदि कोमल भाव गीतों में रागात्मकता या भावात्मकता का संचार करते हैं। महादेवी के गीतों में हमें यत्र-तत्र यही भावात्मकता द्रष्टव्य होती हैं-

"झिलमिलाती रात मेरी /साँझ के अंतिम सुनहरे/हास सी चुपचाप आकर/मूक चितवन की विभा
तेरी अचानक छू गई भर/ बन गई दीपावली तब आँसुओं की पाँत मेरी।"[14]

भावों की सुंदरता के साथ-साथ किसी रचना के सौष्ठव के लिए शैली की सुकुमारता भी जरूरी होती है। भावानुकूल भाषा का प्रयोग गीतों में चार चाँद लगाता है। कोमलकांत पदावली, वर्ण मैत्री, बिंब व प्रतीकों का प्रयोग गीतों में श्रेष्ठता लाता है। महादेवी की रचनाओं में हमें ये सभी तत्त्व द्रष्टव्य होते हैं।

"वे मुस्कराते फूल नहीं, जिनको आता है मुरझाना/ वे तारों के दीप नहीं, जिनको भाता है बुझ जाना
वे नीलम के मेघ नहीं, जिनको है घुल जाने की चाह/ वह अनंत ऋतुरात नहीं, जिसने देखी जाने की राह।

XXXXX

ऐसा तेरा लोक वेदना, नहीं, नहीं जिसमें अवसाद/जलना जाना नहीं नहीं, जिसने जाना मिटने का स्वाद।
क्या अमरों का लोक मिलेगा, तेरी करुणा का उपहार/रहने दो हे देव ! अरे, यह मेरे मिटने का अधिकार।"[15]

एक अच्छा उदाहरण द्रष्टव्य है-

"टूट गया वह दर्पण निर्मम/किसमें देख सँवारूँ कुंतल, अंगराग पुलकों का मल मल
स्वप्नों से आँजूँ पलकें चल, किस पर रीझूँ किस से रूठूँ
भर लूँ किस छवि से अंतरतम, टूट गया वह दर्पण निर्मम।"[16]

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि महादेवी के गीतों में हमें संगीतात्मकता, भावात्मकता, संक्षिप्तता, काल्पनिकता, शैलीगत सुकुमारता आदि विशेषताएँ द्रष्टव्य होती हैं। इस युग के गीतों के संबंध में स्वयं महादेवी ने कहा है कि- "इस युग के गीतों की एकरूपता में भी ऐसी विविधता है जो उन्हें बहुत काल तक सुरक्षित रख सकेगी। उनमें कुछ गीत मलय समीर के झोंके के समान हमें अंतरतम तक सिहरा देते हैं, कुछ अपने दर्शन से बोझिल पंखों द्वारा हमारे जीवन को सब ओर से छू लेना चाहते हैं, कुछ किसी अलक्ष्य डाली पर छिप कर बैठी हुई कोकिल के समान हमारे ही किसी भूले स्वप्न की कथा कहते रहते हैं और कुछ मंदिर के फूल-धूप-धूम के समान हमारी दृष्टि को धुँधल परंतु मन को सुरभित किए बिना नहीं रहते।"[17]

मन्दर्भ-

1. आचार्य रामचंद्र शुक्ल : हिंदी साहित्य का इतिहास, कमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संवत् 1997, पृष्ठ 650
2. द्वारिका प्रसाद सक्सेना : हिंदी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, 2006, पृष्ठ 320
3. महादेवी वर्मा : यामा, अपनी बात, भारती भंडार लीडर प्रेस, इलाहाबाद, तृतीय संस्करण, संवत 2008, पृष्ठ 6
4. वही, पृ० 04
5. महादेवी वर्मा : रश्मि, महादेवी वर्मा संचयिता, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण, 2008, पृ० 43
6. महादेवी वर्मा : नीरजा, महादेवी वर्मा संचयिता, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण, 2008, पृ० 49
7. वही, पृ० 51
8. वही, पृ० 74
9. एन. आर. परमार (सं.): महादेवी वर्मा का रचना संसार, नलिनी अरविंद एंड टी.वी. पटेल आर्ट्स कॉलेज, वल्लभ विद्यानगर, 2008, पृ० 183
10. वही, पृ० 183
11. महादेवी वर्मा : नीरजा, महादेवी वर्मा संचयिता, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण, 2008 पृष्ठ 75
12. वही, पृ० 52
13. वही, पृ० 52
14. महादेवी वर्मा : पचास कविताएँ, सं. अनामिका, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2012, पृ० 64
15. महादेवी वर्मा : नीहार, महादेवी वर्मा संचयिता, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण, 2008, पृ० 30
16. महादेवी वर्मा : नीरजा, महादेवी वर्मा संचयिता, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण, 2008, पृ० 63-64
17. महादेवी वर्मा : यामा, अपनी बात, भारती भंडार लीडर प्रेस, इलाहाबाद, तृतीय संस्करण, संवत 2008, पृ० 06

——×——